नो रेड लाइट इन इंडिया

असग़र वजाहत

नो रेड लाइट इन इंडिया

अमेरिका के हार्वर्ड विजनेस स्कूल से एम.बी.ए.। आक्सफोर्ड से बी.ए.। किंग्स कॉलेज से हाईस्कूल। बीरु भाई को ये सब डिग्रियां देखकर हंसी आती है। लेकिन हंसी दबा लेते हैं, पी लेते हैं क्योंकि ये डिग्रियां उनके एकलौते बेटे रतन भाई रनवानी को मिली हैं। उन्होंने रतन की ऐसी एजूकेशन दी है और रतन ने ली है जो दुनिया की सबसे अच्छी बिजनेस एजूकेशन कही जा सकती है। ये डिग्रियां देखकर बीरु भाई रनवानी को क्यों हंसी आती है? वे जानते हैं कि ये लड़के जितना जानते हैं इंटरनेशनल मार्केट के बारे में नए एरियाज़ ऑफ बिजनेस के बारे में उतना बीरु भाई नहीं जानते। बीरु भाई तो गुजरात के गुमनाम से शहर रनवान से हाईस्कूल फेल हैं। लेकिन उन्होंने टाटा और बिड़ला को पीछे कर दिया है। उन्होंने कारपोरेट बिजनेस का नया व्याकरण रचा है। वे जिस तरह आगे बढ़े हैं वैसे तो आंधी और तूफान भी नहीं बढ़ते। उनकी बढ़त देखकर लोगों के होश उड़ गए थे। रनवान जैसी जगह का एक आवारा-सा लड़का देखते-देखते दो सौ अरब का आसामी बन बैठा था।

–ये तुम लाल बत्ती पर गाड़ी क्यों रोक देते हो? बीरु भाई ने अपने सबसे छोटे बेटे रतन से कहा।

– डैड लाइट रेड है। रतन बोला।

यूं तो सैकड़ों क्या हजारों ड्राइवर हैं, लेकिन बीरु भाई पुराने जमाने के आदमी हैं। खुद आगे की सीट पर बैठते हैं। कभी सीट बेल्ट नहीं लगाते। पहले तो बाप बेटे से इस बात को लेकर झगड़ा हो जाया करता था। रतन कहता था डैड आप जब तक बेल्ट नहीं लगाएंगे मैं गाड़ी नहीं चलाऊंगा।

–मैं बेल्ट कभी नहीं लगाता।

–डैड ये लेटेस्ट मॉडल की कैडीलॉक उस वक्त तक स्टार्ट ही नहीं होगी जब तक आप बेल्ट नहीं लगाएंगे।

–ठीक है अब लो। बीरु भाई ने अपनी कमर के पीछे से बेल्ट लगा ली।

–ये क्या डैड?

–अब गाड़ी स्टार्ट करो।

–गाड़ी स्टार्ट हो गई। बीरु भाई के चेहरे पर भाव वही रहे जो पहले थे। दोनों कुछ देर खामोश रहे। अगले चौराहे पर लाल बत्ती आ गई। रतन ने गाड़ी रोक दी।

– लाल बत्ती पर गाड़ी मत रोका करो। बीरु भाई ने रतन से कहा।

–डैड ये इंटरनेशनल रूल है।

– हां लेकिन नेशनल रूल नहीं है।

–तो डैड ये लाल बत्तियां क्यों लगाई गई हैं।

–रतन बहस मत करो ये बत्तियां हमारे लिए नहीं हैं।

–डैड एक्सीडेंट हो जाएगा।

–हो जाने दो। बीरु भाई बोले।

–डैड प्लीज।

–रतन तुम्हें इंडिया में काम करना है।